om 24 final Delhi_Page 1 and 2 18/03/2015 10:54 Page 2

मय से 'मैं' को अलग करना अध्यात्म

स्वामी विवेकानंद बारंबार एक कथा का उल्लेख करते थे, एक सिंहनी सगर्भा थी, ऐसे में वे ऊँची जगह से छलांग लगाकर सामने के किनारे जा रही थी और बीच में ही उसका प्रसव हो गया। सिंहनी तो छलांग लगाकर आगे निकल गई, लेकिन उसका बच्चा नीचे जाते हुए भेड़ों के समूह में जा गिरा। सिंह के बच्चे को तो पता ही नहीं था कि वो खुद सिंह है, थोड़े ही समय में वो बैठ गया और फिर खड़ा होकर भेड़ों के साथ चलने लगा। धीरे-धीरे वह भी भेड़ों की तरह ही उनके साथ बड़ा होता गया। उनके साथ तुलना करने का तो कोई सवाल ही नहीं था, और उसको समझ भी कौन देवे? सिंहनी के बच्चे ने यह स्वीकार कर लिया कि वह भी एक भेड़ ही है और जैसे ये जीते हैं वैसे खुद को भी जीना है।

- ब्र. कु. गंगाधर

मानव के बच्चों का भी वैसा ही हाल है। जिसके बीच में वो बड़ा होता है, उस जैसा वह भी बन जाता है और उनके जैसा ही वह जीने लगता है। हिन्दु के घर में जन्मे तो हिन्दु बन जाता है। मुसलमान परिवार में जन्मे तो खुद को मुस्लिम मानने लगता है, और सब जैसे जीते हैं वैसे वो भी जीने लग जाता है। उनके संस्कार, उनके रीति-रिवाज़ और उनकी जीवनशैली तथा परंपरागत चली आ रही मान्यताओं को स्वीकारने लगता है। सिक्ख या जैन परिवार में कोई जन्मता है तो सिक्ख या जैन के रूप से पहचाना जाता है। और जैसा भेड़ के समूह को देख सिंहनी का बच्चा करता था, वैसा ही वो भी करने लग जाता है। वो उनकी भाषा, उनकी धारणाएं, उनके हावभाव, शास्त्र व सम्प्रदाय को अपना लेता है। जिस परिवार व कौम के मध्य में जन्मता है वो उसी के अनुरूप उनकी भावनाएं तथा मान्यताएं स्वयं की बना लेता है और जीवन में उसी को आधार बनाकर जूंझता है। जब मानव के बच्चे को भी यह ख्याल नहीं आता तो बिचारा सिंह का बच्चा क्या करेगा!

दिन प्रतिदिन भेड़ों की तरह ही वह बड़ा होने लगा, भेड़ की तरह चलना और जैसे वे डरते, वैसे सिंह का बच्चा भी डरना सीख गया। फिर एक बार भेड़ों के समूह के साथ सिंह का बच्चा भी जा रहा था, ऐसे में एक वृद्ध सिंह की नज़र उनपर पड़ी। उसे आश्चर्य हुआ, कतारबद्ध चलते भेड़ों के मध्य एक अकेला सिंह...! ना तो वो भेड़ों का समूह उससे डरता है और ना ही सिंह उनको खाने के लिए तत्पर है!... कुछ असंभव जैसा बना हुआ दिख रहा है। नीची मुंडी करके चलने वाले भेड़ों की तरह युवा सिंह भी चल रहा था। वो वृद्ध सिंह, ये दृश्य देख भेड़ों के समूह की ओर आगे बढ़ा। उसको देख सारे भेड़ का समूह बें...बें... करते भागने लगा। वो युवा सिंह भी उस भेड़ के समूह के साथ भागने लगा। वृद्ध सिंह को आश्चर्य हुआ। वृद्ध सिंह उस युवा सिंह के पीछे दौड़ा और बड़ी मेहनत के बाद उसको पकड़ पाया। युवा सिंह उससे डर रहा था और उसे छोड़ देने की विनती कर रहा था। वृद्ध सिंह ने कहा, ''ऐ नासमझ! ऐसे कहाँ भाग रहा है? तुम भेड़ नहीं हो, सिंह हो सिंह!'' लेकिन उसकी बात को सुने कौन? उसे तो इस बात में कुछ चालबाज़ी हो ऐसा लगा। वो किसी शड्यंत्र में फंस तो नहीं गया है...? ऐसे विचार के साथ वो घबराने लगा। वर्षों तक इसी रीति से जिया था, जिस रीति से उसने सोचा था। उससे ये बात बिल्कुल विपरीत थी, इसलिए वो मान भी कैसे सकता था? इस संदर्भ में परमात्मा ने बताया है कि **''आपको कोई कहे कि आप देह नहीं हैं, तो आपको इस बात पर विश्वास हो सकता है? जब कोई महान पुरुष आपके पास आकर कहता है कि आप तो शुद्ध-चित्त, चैतन्य स्वरूप आत्मा हो... तो क्या ये बात भरोसेमंद लगती है?... आप भी ऐसे महान पुरुषों की बात सुनने के लिए कहाँ तैयार होते हो! आपको भी उस बात में चालबाज़ी या कुछ शड्यंत्र जैसा तत्व लगता है। लेकिन महान पुरुष वृद्ध सिंह की तरह ही ज़िद्दी होते हैं। उसने युवा सिंह का पीछा छोड़ा नहीं। खींचते-खींचते वो उसे एक सरोवर के किनारे पर लेकर गया। महान पुरुष भी जैसे-वैसे को नज़रअंदाज़ कर उसको जगाने में ही लगे रहते हैं।** उनसे छिटकने के लिए हम कितनी भी कोशिश करें तो भी वे महान पुरुष सत्य की ओर ले जाने की ही कोशिश करते हैं, और ही सत्य की ओर धकेलते हैं। हम सबने असत्य मुखौटा ओढ़ के रखा है, इसीलिए दर्पण के सामने जाने से डरते हैं। वो सिंह भी डरता था, वृद्ध सिंह ने उसे पकड़कर सरोवर किनारे पर खड़ा किया और पानी में देखने को कहा-''ऐ नासमझ! नीचे पानी में तो देख, तेरे और मेरे चेहरे में कुछ फर्क है? ये तू देख। उसमें कुछ अंतर है? जैसा मैं हूँ वैसा तू भी है।'' महान पुरुष भी यही बात - शेष पेज 8 पर...

कुछ भी हो अपने आपको सीधे राह पर ले आना है

बाबा की श्रीमत पर जो चलते हैं उनको देख के चलना होता है, उनसे राय ले सकते हैं। जो बाबा ने सिखाया है वो अगर हमारे जीवन में नहीं है तो यह हमारी कमज़ोरी है। हमारी कमज़ोरी के कारण सेवा में जो सफलता मिलनी चाहिए या जो मुझे बड़ों की दुआयें मिले या जिनकी सेवार्थ निमित्त हूँ, वहाँ से भी मुझे बल मिले, वह नहीं हो सकता। तो ऐसा पहले जो कुछ भी था, आज उसमें परिवर्तन दिखाई दे, लगे कि वंडर है कैसे यह बदल गई है। ऐसा परिवर्तन दूसरों को प्रेरणा देने वाला हो जाये, इतना अभी हमको अपने ऊपर ध्यान देना है। ध्यान न होने के कारण कई संस्कार, स्वभाव हमारे को अधीन बना देते हैं। प्रेज़ेन्ट समय हर एक ने अपनी स्थिति, अपने संस्कार के अनुसार जान बूझ करके बनाके रख ली है। जैसी हमारी स्थिति है, जैसी यज्ञ की परिस्थितियां हैं, अनुभवी हो चुके हैं, अपनी स्थिति अच्छी ठीक रहे, यथायोग्य यथा शक्ति अपने आपको फिक्स करके रखा है इसलिए कहते हैं आप मुझे ज़्यादा फोर्स नहीं करो।

फोर्स नहीं करेंगे लेकिन सच की राह बताना छोड़ेंगे नहीं क्योंकि आप अपनी कमज़ोरी के कारण ऐसा बोल रहे हो, आज इतने बड़े संगठन से, इतनी बड़ी प्राप्ति, इतना बड़ा भाग्य वो छोड़ के हम अपने नाज़ुक स्वभाव के कारण अपनी स्थिति ऐसी बनाके रखूं, दूरबाज खुशबाज... तो क्या होगा? मेरा क्या हाल होगा और जिनके निमित्त हैं उनका क्या होगा? तो जो बाबा कहता है वही स्वभाव संस्कार बनाके रखो। बाबा भी कहता है मैं साथ दे रहा हूँ, और समय भी कहता है-तुम ऐसा स्वभाव बनाओ। अपनी कमज़ोरी से मैं हार न खा लूं। मुझे वैजयन्ती माला में आना है, बस। कुछ भी हो जाये अपने आपको सीधे राह पर लेके जाना है। बड़ों की दया दृष्टि है जो मुझे अपना समझकर बहुत प्यार किया है क्योंकि सीखने की भावना रही है, जो कह रहे हैं वो मानने की भावना है। अगर मुझे मान चाहिए तो पहले मानने का गुण सीखो। मुझे मान देना है, यह नहीं कहो यह छोटी कौन है जो मुझे कहती है। अगर यह कहा तो रिश्ता टूटा। रूहानियत में रहना माना सबको रूहानी दृष्टि से देखना।

जिसको अपनेपन की फीलिंग न आती हो तो वो क्या है! दादियां, ऐसे दादियां नहीं बनी हैं, बड़ी दिल रखी है। सबको स्नेह दिया है। और जो प्यार से शिक्षा को स्वीकार करता है उसको सदा शिक्षाओं से प्यार है, शिक्षक के लिए रिगार्ड है। श्रीमत पर चलकर एक ही दीदी मिसाल बनी जिसको नियम, मर्यादा, सभ्यता में सारी लाइफ देखा। किसी के नाम रूप में फंसता हुआ नहीं देखा। कोई दीदी के नाम रूप में फंसे तो सही, वो हर एक को नाक कान से पकड़ करके बाबा के साथ प्यार करना सिखा देती। सर्वशक्तिवान बाबा से शक्ति ले करके सिर्फ सत् की राह पर चलते उड़ते रहें। खास जो नाम रूप में फंसी हुई आत्मा है, उनसे बाबा को बांस आती है। थोड़ा भी किसके नाम रूप में कोई झुका तो भी बाबा को पसंद नहीं है इसलिए कहा जाता है मंज़िल ऊँची है।

दादी जानकी, मुख्य प्रशासिका

बुद्धि में कोई खराब प्रकार का डिफेक्ट, इफेक्ट न आ जाये। किसके भी भाव-स्वभाव का मेरे ऊपर इफेक्ट आया या पेन महसूस हुआ तो दुःख देने वाले का दोष नहीं है। दुःखी मैं हुई तो मेरा दोष है। दुःख देने वाले ने अपना काम किया। अगर अपमान करने वालों से मैंने अपना मुँह सदा के लिए मोड़ लिया तो यह कौन-सी रूहानियत है? हेलो ही न करूँ, वो मेरे सामने ही न आ सके, वो आवे तो मैं पीठ दे दूं। अभी यह जिस प्रकार की हमारे मन में संकल्प की लेन-देन है, उसी अनुसार वाणी निकलती है, कर्म होते हैं, तो यह कितना बड़ा हिसाब-किताब जोड़ रहे हैं। पहले का ही इतना कड़ा हिसाब-किताब चुक्तु नहीं हुआ है, अभी यह इतना कड़ा हिसाब-किताब कब चुक्तु करेंगे? इसलिए हम महान भाग्यशाली हैं, स्वयं भगवान ने हमको कर्मों की गुह्य गति समझाई है। उस समझानी का हमको ही अगर इतना कदर नहीं है तो और हमारा क्या कदर करेंगे।

सबसे बड़ा खजाना संगमयुग का समय है

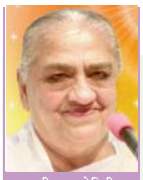

दादी हृदयमोहिनी अति.मुख्य प्रशासिका

बाबा को हम सदैव अपने सामने लाते रहें। हमें तो बाबा की मूर्त में ही सम्पन्नता दिखाई दी। उसकी निशानी यह है कि स्वयं अशरीरी स्थिति में रहते थे। जब बाबा झोपड़ी में बैठते थे तो जब भी कोई बाबा के सामने जाता था तो बाबा की दृष्टि मिलते ही उनको पूछना भूल जाता था। एकदम बाबा की मूर्त से अशरीरीपन का अभ्यास ऑटोमेटिकली हो जाता था। तो साकार बाबा के सामने जाने से ही जो पूछना कहना होता था वो एकदम भुला करके ऐसे साइलेंस में अशरीरी स्टेज पर ले जाता था। यह प्रैक्टिकल अनुभव हम सभी ने किया है।

तो ज्ञान, शक्तियां और गुण तो हैं ही हमारा खज़ाना लेकिन चौथा बाबा ने अटेन्शन दिलाया है-सबसे बड़ा खज़ाना है समय का। यह जो संगम का समय है-यह सबसे बड़ा खज़ाना है क्योंकि कोई भी प्राप्ति, कोई भी कर्म समय अनुसार ही होता है। सुबह से लेकर हमारी जो भी दिनचर्या चलती है, वो समय के आधार पर चलती है। तो अगर समय के खज़ाने को सही रीति विधिपूर्वक हम कार्य में लगाते हैं, तो हमारे सारे कल्प का भविष्य निश्चित हो ही जाता है क्योंकि यह संगम का समय, एक सेकेण्ड 5 हज़ार वर्ष की प्रालब्ध का आधार है और कोई भी युग में हमारी प्रालब्ध नहीं बन सकती है। यही संगम का समय है जिसमें हमारी चढ़ती कला होती है। तो संगम समय पर राज्य-अधिकारी बनने से भविष्य में भी राज्य अधिकार निश्चित है ही फिर भक्तिकाल में पूज्य भी ज़रूर बनना ही है। भले द्वापर से गिरना शुरु करते हैं लेकिन हमारा पूज्य रूप तो कायम होता है। हम सब पूज्य ज़रूर बनने वाले हैं लेकिन जैसे यहाँ पुरुषार्थ में नम्बर हैं वैसे पूज्य में भी नम्बर हैं।

किसी-किसी बड़े-बड़े मंदिरों में रोज़ हर कर्म का यादगार पूज्य के रूप में विधिपूर्वक पूजा जाता है और कहीं-कहीं ऐसा नहीं होता है। मंदिरों में भी फर्क है। यह सारा फर्क इस संगम समय के पुरुषार्थ और प्राप्ति के ऊपर है। तो हमको देखना है कि सबसे बड़ा खज़ानों का आधार जो समय का खज़ाना है उसको हम कितना और कैसे यूज़ करते हैं? क्योंकि बाबा का कहना है कि अब नहीं तो कब नहीं का पाठ पक्का करना है। एक सेकेण्ड में कुछ भी हो सकता है, अचानक होगा तब तो माला में नम्बरवार होंगे। तो अचानक होना है, उसके कारण बाबा कहता है-संगम के एक-एक सेकेण्ड का अटेन्शन हो। ऐसे ही साधारण रूप में इसे न गंवायें। समय का बहुत ध्यान रखना है इसके लिए अटेन्शन बहुत रखना पड़ेगा। ऐसे ही साधारण रीति से हमारा दिन बीता तो वहाँ भी साधारण ही बनना पड़ेगा। तो अपनी लगन में मगन और अपनी कमाई जमा करने में मस्त रहें।

ज्ञान माना यह नहीं कि सिर्फ हमने समझ लिया फिर भी बाबा कहते ज्ञानी तो बने लेकिन अभी पावरफुल नहीं बने हैं। बाबा से प्यार का सर्टिफिकेट तो हम सबने ले लिया, प्यार नहीं होता तो छोड़ के आते क्यों? इसलिए प्यार में तो पास हैं। हम कोर्स करा सकते हैं, बड़ी-बड़ी जगहों पर भाषण कर सकते हैं, बुद्धि में सारी नॉलेज है रचता और रचना की, लेकिन ज्ञान माना समझ। ज्ञान का अर्थ ही है समझ। तो समझ सिर्फ बोलना, ज्ञान वर्णन करना नहीं है। समझ हर कर्म में चाहिए, मानो हम संकल्प करते हैं उसमें भी समझ चाहिए-राइट है या रॉंग है। हम फालतू को ही बढ़ाते रहते हैं, तो यह ज्ञान है क्या? समझ है क्या? तो सोच-समझ के काम करना है इसको कहते हैं ज्ञानी तू आत्मा। ज्ञान, गुण और शक्तियां... इसके लिए भी बाबा ने खास यह इशारा दिया है कि समय अनुसार, समस्या अनुसार जिस शक्ति की आवश्यकता है वो काम में आ जावे। तो ज्ञानी माना हर संकल्प, हर कर्म सोच समझकर करें। अगर समझ के आधार पर हम काम करेंगे तो हमारे कर्म कभी भी विकर्म नहीं होंगे, सुकर्म ही होते रहेंगे।